३. लकड़हारा और वन

– अरविंद भटनागर

परिचय

परिचय : अरविंद भटनागर जी एकांकीकार के रूप में प्रसिद्ध हैं । पर्यावरण परिरक्षण के लिए वृक्षारोपण एवं वृक्ष संवर्धन की आवश्यकता पर हमेशा आपने बल दिया है ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत एकांकी में लेखक ने मेहनत, ईमानदारी एवं छोटे परिवार का महत्त्व समझाया है । आपका कहना है कि पेड़-पौधों से हवा, पानी, फल मिलते हैं । अतः हमें पेड़-पौधों, वनों का संरक्षण करना चाहिए ।

मौलिक सृजन

'प्रकृति हमारी गुरु' विषय पर अपने विचार लिखो ।

पात्र

१. लकड़हारा २. एक ग्रामीण व्यक्ति के रूप में भगवान ३. लकड़हारे की पत्नी ४. एक हरा-भरा पेड़ ।

पहला दृश्य

(एक लकड़हारा टहलता हुआ मंच पर आता है । लकड़हारे के हाथ में कुल्हाड़ी है । वह पेड़ के पास आकर रुक जाता है।)

लकड़हारा : **(पेड़ को देखकर)** चलो, आज इसी पेड़ को काटें । इससे आज की रोटी का इंतजाम हो जाएगा । **(पेड़ की डाल काटने के लिए कुल्हाड़ी चलाता है पर कुल्हाड़ी हाथ से छूटकर नदी में गिर जाती है ।)**

लकड़हारा : **(चिंतित एवं दुखी स्वर में)** हे भगवान ! मेरी कुल्हाड़ी... पानी गहरा है, तैरना आता नहीं । कैसे काटूँगा, क्या बेचूँगा ? आज बच्चे क्या खाएँगे ? **(इसी बीच भगवान ग्रामीण व्यक्ति का वेश धारण कर मंच पर आते हैं ।)**

ग्रामीण : बड़े दुखी लग रहे हो । क्या हुआ ?

लकड़हारा : **(दुख भरे शब्दों में)** क्या कहूँ भाई, अचानक मेरी कुल्हाड़ी नदी के गहरे पानी में गिर पड़ी । मेरा तो सब कुछ चला गया ।

ग्रामीण : हाँ भाई, तुम्हारा कहना तो ठीक है ।

लकड़हारा : भाई, तुम मेरी मदद कर सको तो बड़ा उपकार होगा ।

ग्रामीण : ठीक है... तुम दुखी मत होओ । मैं कोशिश करता हूँ । **(यह कहकर ग्रामीण नदी में कूदा और एक चाँदी की कुल्हाड़ी निकालकर बाहर आया ।)** अरे भाई, तुम कितने भाग्यवान हो । लो, तुम्हारी चाँदी की कुल्हाड़ी ।

लकड़हारा : नहीं भाई, यह कुल्हाड़ी मेरी नहीं है ।

ग्रामीण : ठीक है । एक बार फिर कोशिश करता हूँ । **(नदी में फिर कूदता है और सोने की कुल्हाड़ी निकालकर बाहर आता है ।)**

लकड़हारा : **(आश्चर्य से)** क्या कुल्हाड़ी मिल गई भाई !

ग्रामीण : हाँ, मिल गई । लो यह सोने की कुल्हाड़ी ।

लकड़हारा : नहीं भाई, मैं तो बहुत गरीब हूँ । यह सोने की कुल्हाड़ी तो

मेरी है ही नहीं । **(दुखी होकर)** खैर, जाने दो भाई, तुमने मेरे लिए बहुत कष्ट उठाए ।

ग्रामीण : **(बीच में ही)** नहीं भाई नहीं । इसमें कष्ट की क्या बात है । मुसीबत के समय एक दूसरे के काम आना तो हमारा धर्म है । मैं एक बार फिर कोशिश करता हूँ । **(ग्रामीण नदी में कूदकर लोहे की कुल्हाड़ी निकालता है ।)**

ग्रामीण : लो भाई, इस बार तो यह लोहा ही हाथ लगा है ।

लकड़हारा : **(अपनी लोहे की कुल्हाड़ी देखकर खुश हो उठता है ।)** तुम्हारा यह उपकार मैं जीवन भर नहीं भूलूँगा । भगवान तुम्हें सुखी रखें ।

ग्रामीण : एक बात मेरी समझ में नहीं आई ।

लकड़हारा : **(हाथ जोड़कर)** वह क्या ?

ग्रामीण : मैंने तुम्हें पहले चाँदी की कुल्हाड़ी दी, फिर सोने की दी, तुमने नहीं ली । ऐसा क्यों ?

लकड़हारा : दूसरे की चीज को अपनी कहना ठीक नहीं है । मेहनत और ईमानदारी से मुझे जो भी मिलता है, वही मेरा धन है । **(ग्रामीण चला जाता है और भगवान के रूप में मंच पर फिर से आता है ।)**

भगवान : धन्य हो भाई, मैं तुम्हारी ईमानदारी से बहुत प्रसन्न हूँ लेकिन एक शर्त पर । तुम हरे-भरे पेड़ों को नहीं काटोगे, न ही लालच में पड़कर जरूरत से अधिक सूखी लकड़ी काटोगे ।

लकड़हारा : मुझे शर्त मंजूर है । (परदा गिरता है ।)

दूसरा दृश्य

(मंच पर लकड़हारा सो रहा है । मंच के पीछे से उसकी पत्नी आवाज देती है ।)

पत्नी : अरे, रामू के बापू, घोड़े बेचकर सो रहे हो । क्या आज लकड़ी काटने नहीं जाना है ?

लकड़हारा : जाता हूँ भागवान । **(अपनी कुल्हाड़ी उठाकर जंगल की तरफ जाता है । मन-ही-मन सोचता है ।)** जिधर देखो, दूर तक जंगल का पता नहीं । जो थे, वे कटते जा रहे हैं और उनकी जगह खड़े हो रहे हैं सीमेंट के जंगल । **(अचानक उसे चोट लगती है, वह चीख उठता है, फिर एक पेड़ की छाँव में बैठ जाता है ।)** अहा ! कितनी ठंडी छाया है । सारी थकान दूर हो गई । **(हरे-भरे पेड़ के नीचे से**

श्रवणीय

विभिन्न अवसरों पर शाला में खेले जाने वाले नाटकों के संवाद ध्यान देते हुए सुनो ।

संभाषणीय

किसी भारतीय लोककथा की विशेषताओं के बारे में अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करो ।

पठनीय

विभिन्न विधाओं से प्राप्त सूचनाओं, सर्वेक्षणों, टिप्पणियों को पढ़कर उनका संकलन करो ।

लेखनीय

किसी लिखित सामग्री के उद्देश्य और उसके दृष्टिकोण के मुद्दों को समझकर उसे प्रभावपूर्ण शब्दों में लिखो ।

उठकर अपनी कुल्हाड़ी सँभालता है ।) चलो यही सही, इसे ही साफ करें । **(कुल्हाड़ी चलाने की मुद्रा में हाथ उठाता है ।)**

पेड़ : अरे ! अरे ! यह क्या कर रहे हो ?

लकड़हारा : **(चौंककर)** कौन ? **(आस-पास नजर दौड़ाता है ।)**

पेड़ : अरे भाई, यह तो मैं हूँ ।

लकड़हारा : **(डरकर)** कौन... भू ... त !

पेड़ : डरो नहीं भाई, मैं तो पेड़ हूँ... पेड़ ।

लकड़हारा : **(आश्चर्य से)** पेड़ ! क्या तुम बोल भी सकते हो ।

पेड़ : भाई, मुझमें भी प्राण हैं । तुम मुझ बेकसूर पर क्यों वार कर रहे हो ?

लकड़हारा : तो क्या करूँ ? चार-चार बच्चों को पालना पड़ता है । यही एक रास्ता है रोजी-रोटी का ।

पेड़ : अरे भाई, अधिक बच्चे होने के कारण परिवार में दुख तो आएगा ही, पर तुम कितने बदल गए हो ! तुम यह भी भूल गए कि मैं ही तुम्हें जीने के लिए शुद्ध हवा, पानी और भोजन, सभी कुछ देता हूँ ।

लकड़हारा : यह तो तुम्हारा काम है । इसमें उपकार की क्या बात है ।

पेड़ : मैंने कब कहा उपकार है भाई । पर यह तो तुम अच्छी तरह जानते हो कि बिना हवा के मनुष्य जिंदा नहीं रह सकता । उसे साँस लेने के लिए शुद्ध हवा तो चाहिए ही और हवा को शुद्ध करने का काम मैं ही करता हूँ ।

लकड़हारा : ठीक है पर मेरे सामने भी तो समस्या है ।

पेड़ : यदि तुम हमें काटते रहे, तो ये बेचारे वन्य पशु कहाँ जाएँगे ? क्या तुम अपने स्वार्थ के लिए उनका घर उजाड़ दोगे ?

लकड़हारा : तो फिर क्या मैं अपना घर उजाड़ दूँ ?

पेड़ : मेरा मतलब यह नहीं है । यदि तुम इसी तरह हमें काटते रहे, तो अच्छी वर्षा कैसे आएगी और एक दिन...

लकड़हारा : तुम्हारी बात तो ठीक है पर अब तुम्हीं बताओ, मैं क्या करूँ ?

पेड़ : कम-से-कम अपने हाथों अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी तो मत मारो । कभी हरा-भरा पेड़ मत काटो । उन्हें अपने बच्चों के समान पालो, ताकि चारों ओर हरियाली छाई रहे ! (लकड़हारा हामी भरता है । उसी समय परदा गिरता है ।)

—०—

शब्द वाटिका

शर्त = बाजी
बलि = आहुति, भेंट, चढ़ावा

मुहावरे

हामी भरना = स्वीकार करना
घोड़े बेचकर सोना = निश्चिंत होकर सोना
अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना = खुद अपना नुकसान करना

* सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–

(१) संजाल पूर्ण करो :

कुल्हाड़ी पानी में गिरने के कारण खड़ी हुई समस्याएँ

(२) संक्षेप में उत्तर लिखो :

१. पेड़ द्वारा दिया गया संदेश –
२. भगवान की शर्त –
३. पेड़ों के उपयोग –
४. पेड़ों की कटाई के दुष्परिणाम –

(३) कृति पूर्ण करो :

पाठ में प्रयुक्त धातुओं के नाम

IZHCU1

भाषा बिंदु

(१) निम्न वृत्त में दिए संज्ञा तथा विशेषण शब्दों को छाँटकर तालिका में उचित स्थानों पर उनके भेद सहित लिखो :

नदी, पहाड़ी, सीता, वह लकड़हारा, पानी, चार किलो, गरीबी, ईमानदारी, गंगा, पालक, दस, चाँदी कोई, सभा, धनी

संज्ञा	भेद	विशेषण	भेद
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------

(२) पाठ में प्रयुक्त कारक विभक्तियाँ ढूँढ़कर उनका वाक्यों में प्रयोग करो ।

उपयोजित लेखन

किसी मराठी निमंत्रण पत्रिका का रोमन (अंग्रेजी) में लिप्यंतरण करो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

किसानों के सामने आने वाली समस्याओं की जानकारी प्राप्त करके उन समस्याओं को दूर करने हेतु चर्चा करो ।